आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2654 • उदयपुर, शुक्रवार 01 अप्रैल, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

जबलपुर (मध्यप्रदेश) में दिव्यांगों को राहत का उपक्रम

नारायण सेवा संस्थान का ध्येय है कि दिव्यांग भी दौड़ेगा–अपनी लाठी छोड़ेगा। इस क्रम में संस्थान की शाखाओं व दानदाताओं के सहयोग से दिव्यांग जाँच, उनका ऑपरेशन के लिये चयन तथा कृत्रिम अंगों का माप लेना व अंग लगाने का कार्य गति पर है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 23 मार्च 2022 को विध्य भवन बैकट हॉल, जबलपुर (मध्यप्रदेश) में हुआ। शिविर सहयोगकर्ता श्रीमान् आर.एन. सिंह जी सा. (सीनियर एडवोकेट) रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 69, कृत्रिम अंग वितरण 27, कैलिपर वितरण 39, कृत्रिम अंग बचे हुए 4, केलिपर बचे हुए 5 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् ए.पी. शुक्ला (एडिशनल कमीश्नर सेलटेक्स), अध्यक्षता श्रीमान एच.एन.मिश्रा जी (रिटायर्ड इंजीनियर), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् एच.पी.पटेल (डॉक्टर), श्रीमान् आर.एस.गुप्ता जी (समाज सेवी), श्रीमान् डी.आर.लखेरा जी, श्रीमान् आर.के. तिवारी (शाखा प्रेरक) श्री हनुमान प्रसाद जी (समाज सेवी) रहे। श्री भगवती जी पटेल,

श्री नाथू सिंह जी (टेक्निशियन) सहित शिविर टीम में श्री मुकेश जी शर्मा (शिविर प्रभारी), श्री प्रकाश जी डामोर (उप प्रभारी), श्री देवीलाल जी मीणा, श्री हरीश रावत (सहायक) ने भी अमूल्य सेवायें दी।

दानवीरों ने की आदिवासियों की सेवा

उदयपुर राज से 70 किमी दूर सघनवन और पहाडियों के बीच गिर्वा तहसील की पंचायत सरूपाल के गांव मोती डूंगरी में नारायण सेवा संस्थान के 7 मार्च को आयोजित निःशुल्क अन्न,वस्त्र वितरण एवं स्वास्थ्य तथा चिकित्सा शिविर में वनसासी स्त्री, पुरूषों और बच्चों के उत्साह का का ज्वार उमड पडा। अति पिछडे एवं गरीब इलाके के इस सहायता शिविर में अमेरिका से आए संस्थान के दानवीर सहयोगी श्री सोहन जी चढ्ढा एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मुक्ता जी सहित अन्य भामाशाहों ने भी सहभागिता की। श्री चढढा ने कहा कि संस्थान के 'नर–सेवा– नारायण सेवा' के मूलमूंत्र को साकार होते देखकर बडी खुशी हुई। शिविर में 500–600

आदिवासियों को उनकी जरूरत के मुताबिक खाद्य सामग्री,वस्त्र व अन्य सामग्री का वितरण किया गया। विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम ने स्वास्थ्य परीक्षण किया व निःशुल्क उपचार के साथ उन्हें दवा उपलब्ध कराई। बच्चों के दांतों की सफाई कर उन्हें टूथपेस्ट ब्रश दिए, स्कुली बच्चों को स्टेशनरी दी गई। बडी संख्या में बाल कटिंग करवाकर बच्चों को नहला कर नये वस्त्र पहनाएं गए। शिविर में वरिष्ठ साधक दलाराम जी पटेल, भगवान प्रसाद जी गौड, दिलीप सिंह जी चौहान, जसबीर सिंह जी आदि ने सहयोग किया।

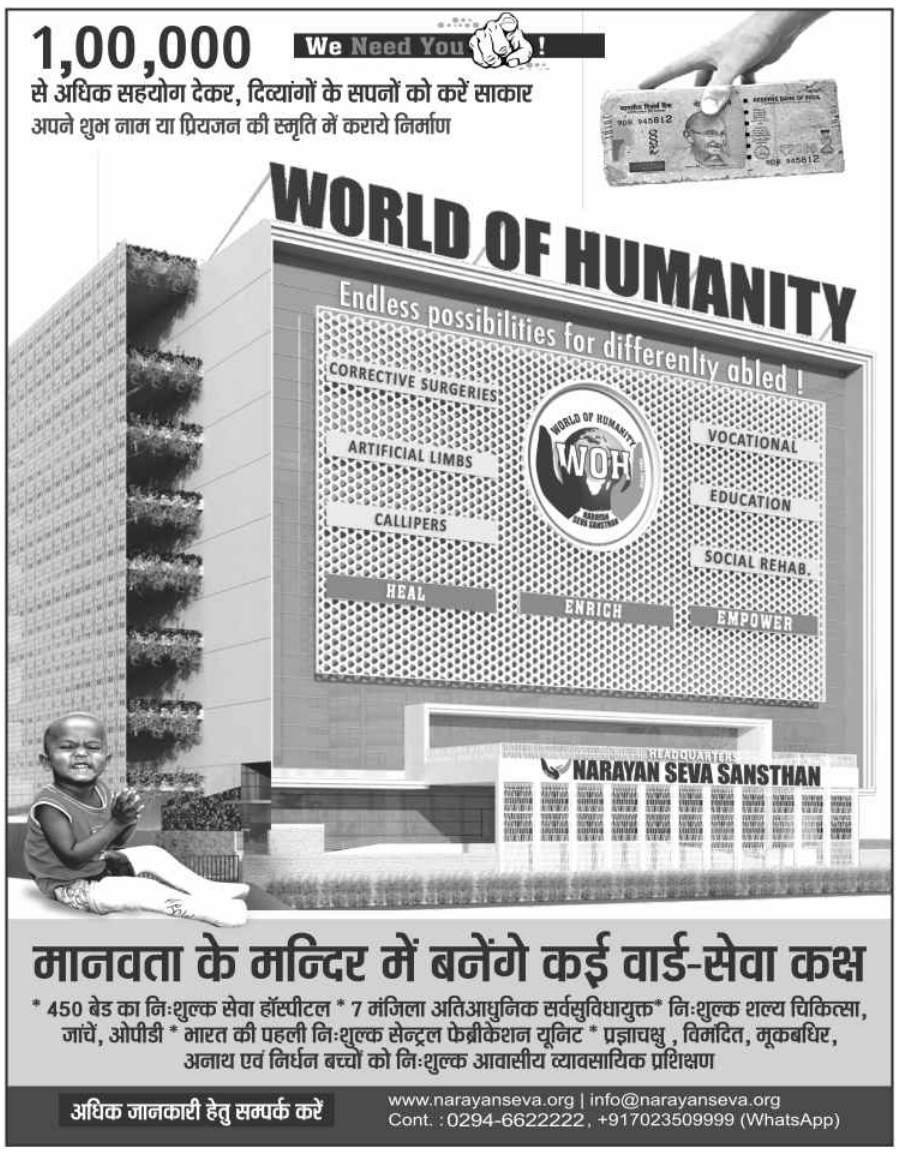

नरेन्द्र के पांवो की गति बनी नीलवती

सामूहिक विवाह समारोह में नरेन्द्र और नीलवती भी परिणय सूत्र में बंधे। नरेन्द्र के दोनों पैर एक रेल हादसे में कट गए। 2 वर्श पहले नरेन्द्र किसी कार्यक्रम में अनूपपुर (मध्यप्रदेश) से पड़ोस के एक गांव गए। वहां सकलांग नीलवती को देखा जो सादगी और संस्कारों को प्रतिमूर्ति थी। नरेन्द्र को अहसास हुआ कि वह नीलवती के लिए अपनी पूरी जिन्दगी न्यौछावर कर सकता है। उसने शब्दों से तो भावनाएं व्यक्त नहीं कि लेकिन उसके चेहरे के भाव नीलवती ने पढ़ लिए। बस फिर क्या था ..... नीलवती ने नरेन्द्र की दिव्यांगता की अनदेखी कर अपने दिल के साथ मोबाइल नम्बर भी दे दिए। दोनों के बीच रोज घंटो बातें होने लगी। दोनों के बीच प्यार का अंकुर पनपा तो परिवार वालों ने भी दोनों के रिश्ते को सहज स्वीकार कर सहमति दे दी।

गरीबी से लाचार इस जोड़े के पास धन का अभाव था इसलिए 2 वर्श से शादी नहीं हो पा रही थी। जब इन्होंने संस्थान से संपर्क किया तो संस्थान ने जन्म–जन्म का साथी बनने का अवसर सहज उपलब्ध करवा दिया।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

विकराल अपभाकुनी वेईन भूर्पणखा कटे पहुँची ? खर–दूषण, अरे ! मैं मरी रे मरी रे। म्हारे नाक कटग्यो रे। नककट्यो, नकटा रो नाक सौ बार कटे और सौ बार बढ़े। खर–दूशण कियो– आओ बहना आओ, अरे ! छोड़ो – वीर बन कर बैठते हो। देखो उधर दो राजकुमार आये हैं उनके साथ एक उनकी पत्नी सुन्दर और उन्होंने देखो मेरे नाक–कान काट दिये हैं, तो उनको मारा डालो। खर–दूषण ने सोचा – यहाँ तो राक्षसों का राज्य है। यहाँ तो ऋषियों को, अच्छे काम करने वालों को, यज्ञ करने वालों को। विकलांगों को ठीक करने वालों को, इनको केलीपर देने वालों को, इनको ट्राईसाईकिल देने वालों को, इन दिव्यांगों के ऑपरेभान कराने वालों को। इन दिव्यांगों के केलीपर्स लगाने वालों को, हाँ, हमने तो दूर भगा दिया। और ये दो राजकुमार कुण आई ग्या ? बहन वो है कैसा ? अरे भाया है तो अतरो सुन्दर थाही मोहित वेई जाओ। असान तो रामचरितमानस में कियो।

मोह न नारि नारी के रूपा,
पन्नगारी यह रीति अनूपा।

ऐसे तो मैं भी नारी हूँ भूर्पणखा नाम है म्हारो। म्हारो सगो भाई रावण है जीका थां सेनापति हो। और थाही म्हारो काम नहीं करोगा तो कूण करेगा ? ऐसे तो में नारी हूँ। नारी, नारी पर मोहित नहीं होती लेकिन में तो सीता पे मोहित होन आई हूँ – भाया। इतनी सुन्दर ! अणा राक्षसा ने रंग–रूप ही नजर आवे।

दो प्रज्ञाचक्षु बने जीवन साथी

दिव्यांगों के चेहरे पर मुस्कान सजाने वाले सामूहिक विवाह में गरीब परिवार का एक जोड़ा नेत्रहीन भी था। नीमच निवासी मोहन कोई काम सीखने की ललक लेकर दो वर्श पूर्व जोधपुर गया था। वहां अंध विद्यालय में उसने नेत्रहीन संगीत प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। अपनी प्रस्तुति से पहले पूजा के सुरों को सुन ..... उसके माधुर्य का कायल हो गया। पूजा को भी मोहन का गीत भा गया। प्रतियोगिता के बाद दोनों की पहली मुलाकात में एक–दूसरे की और आकर्शित हो गए और परस्पर चाहने लगे। अपने–अपने घर लौटने के बाद घंटों मोबाइल पर बात होने लगी। दोनों के बीच जीवन का हमसफर होने की सहमति बनी और परिजनों को अपने निर्णय की जानकारी दी। परिवार की गरीबी विवाह के आयोजन में बाधा थी। कुछ ही माह पूर्व इन्होंने नारायण सेवा संस्थान से सम्पर्क किया। जिसने उन्हें उनके सपने को मूर्त रूप दे दिया।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

सम्पादकीय

सेवा, साधना है। यह साध्य तक पहुँचने का सर्वसुलभ मार्ग है। यों तो साध्य तक जाने के लिए अनुभवियों व विद्वानों ने अनेक साधन सुझाए हैं। अनेक ने उनका प्रयोग करके सिद्धियां भी पाई हैं। पर सेवारूपी साधन तो सर्वसुलभ है। हमारे चारों ओर ऐसे मानव एवं प्राणी हैं जिन्हें तत्काल सेवा की आवश्यकता है। यह जरूरी नहीं है कि हम कोई बड़ी सेवा करें, बड़ी राशि खर्च करें तभी सेवा होगी। छोटी–बड़ी सेवा यह तो भावात्मक भेद है। गुणात्मकता ये तो प्रत्येक सेवा का एक सा महत्व है। हमारे पास यदि धन है तो धन लगाकर, धन नहीं है तो समय लगाकर, धन और समय दोनों नहीं है तो सेवा कार्य को सराहकर भी सेवा–पथिक बना जा सकता है। यदि किसी के पास ये तीनों ही साधन हैं तो फिर तो क्या कहना? सेवा कैसी भी हो, कहीं भी हो, कितनी भी हो तथा कभी भी हो, सब परमात्मा की दृष्टि में रहती है। यह ईश्वरीय कार्य में मानव का सहयोग ही है तथा मानव जीवन को सफल करने का मंत्र भी है।

कुछ काव्यमय

दीनदुखी कैसे सुखी, बनें यही हो चाह।
करुणा नैनों में भरे, ऐसी बने निगाह।।
देख किसी की पीर को, मन व्याकुल हो जाय।
ताप मिटे जब दीन का, मन शीतल हो पाय।।
हाथ उठे सेवा करे, तो पावनता छाय।
दीनदुखी के स्पर्श से, कर पावन हो जाय।।
कदम बने सेवा पथिक, बढे लक्ष्य की ओर।
बंधे दीनदयाल से, मेरी जीवन डोर।।
मैं सोचूं ऐसा सदा, सेवा मेरा काम।
तब ईश्वर के प्रेम से, बन पाऊँ निष्काम।।

समस्याओं से घबराएं नहीं

'जीवन है तो समस्याएं भी है। समस्याओं से घबराना भी नहीं है और उनकी उपेक्षा भी नहीं करनी है। कुछ समस्याएं हम स्वयं उत्पन्न करते हैं, तो कुछ स्वतः सामने आकर खड़ी हो जाती है। हमें उन्हें हल करने का प्रयास तो करना ही, लेकिन उससे इस कदर परेशान भी न हो जाएं कि जीवन का उद्देश्य और आनन्द दोनों ही भूला बैठें।'

किसी शहर में एक आदमी प्राइवेट कम्पनी में काम करता में जॉब करता था। वो अपनी जिन्दगी से खुश नहीं था, हर समय वो किसी न किसी समस्या से परेशान रहता था। एक बार शहर से कुद दूरी पर एक महात्मा का काफिला रूका। शहर में चारों और उन्हीं की चर्चा थी। बहुत से लोग अपनी समस्याएं लेकर उनके पास पहुंचने लगे, उस आदमी ने भी महात्मा के दर्शन करने का निश्चय किया। छुट्टी के दिन सुबह–सुबह ही उनके काफिले तक पहुंचा। बहुत इन्तजार के बाद उसका नम्बर आया। वह बाबा से बोला बाबा, मैं अपने

जीवन से बहुत दुःखी हूं, हर समय समस्याएं मुझे घेरे रहती हैं, कभी ऑफिस की टेंशन रहती है, तो कभी घर पर अनबन हो जाती है और कभी अपनी सेहत को लेकर परेशान रहता हूं। बाबा कोई ऐसा उपाय बताए कि जीवन से समस्याएं खत्म हो जाएं और मैं चैन से जी सकूं ? बाबा मुस्कराएं और बोले–पुत्र आज बहुत देर हो गई है, मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर कल सुबह दूंगा, लेकिन क्या तुम मेरा एक छोटा सा काम करोगे? हमारे काफिले में सौं ऊंट हैं, मैं चाहता हूं कि आज रात इनका ख्याल रखो जब सौ के सौ ऊंट बैठ जाएं तो तुम भी सो जाना। ऐसा कहते हुए महात्मा अपने तम्बू में चले गए। अगली सुबह महात्मा उस आदमी से मिले और पूछा –कहों बेटा, नींद अच्छी आई। वो दुःखी होते हुए बोला– कहां बाबा, मैं तो एक पल भी नहीं सो पाया। मैंने बहुत कोशिश की पर मैं सभी ऊंटो को नहीं बैठा पाया, कोई न कोई ऊंट खड़ा हो ही जाता। बाबा बोले–बेटा कल रात तुमने अनुभव किया कि चाहे कितनी भी कोशिश कर लो सारे ऊंट एक साथ नहीं बैठ सकते, तुम एक को बैठाओगे तो कोई दूसरा खड़ा हो जाएगा। इसी तरह जब तक जीवन है समस्याएं तो बनी ही रहेंगी। कभी कम तो कभी ज्यादा। तो हमें क्या करना चाहिए? आदमी ने पूछा। इन समस्याओं के बावजूद जीवन का आनन्द लेना सीखो, कुछ तो अपने आप ही खत्म हो जाएंगी और कुछ तुम्हारे बहुत कोशिश करने पर भी हल नहीं होंगी, ऐसी समस्याओं को समय पर छोड़ दो, उचित समय पर वे खुद ही खत्म हो जाती हैं। जीवन है तो समस्याएं भी रहेंगी, पर इसका ये मतलब नहीं कि तुम दिन रात उन्हीं के बारे में सोचते रहो। जीवन का आनन्द लो, जब उनका समय आएगा वे खुद ही हल होती चली जाएंगी।

रोटी, कपड़ा और मकान

'तन की पवित्रता के साथ मन को भी पवित्र रखना जरूरी है। जो गुरू के बताए सेवा पथ पर चलते है, उन्हें जीवन में दूसरों पर निर्भर रहने की नौबत नहीं आती। मनुश्य आयु अथवा पद में चाहे कितना की बड़ा हो, परमार्थ के बिना पूर्ण नहीं होता। निःस्वार्थ भाव से की गई सेवा से बढ़कर संसार में

कोई धर्म नहीं है। मानवीयता परमात्मा को परमप्रिय है। जिसके जीवन में सेवा का स्वभाव हो, पावनता और निश्कामता हो वही बेहतर इन्सान माना गया है। व्यक्ति प्रभाव में नहीं स्वभाव से ही अच्छा और सह्रदयी कहलाता है।' आपकी अपनी संस्था नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक–चेयरमैन पूज्य गुरूदेव श्री कैलाश जी मानव का प्रवचनों और आचरण में सदैव यही संदेश रहता है कि सेवा को स्वभाव बनाया जाय। इसी ध्येय वाक्य को लेकर संस्थानों दिव्यांगों, निराश्रितों, गरीबों और दीन–दुःखियों की सेवा में आपके परम पुनीत आशीर्वाद और सहयोग से अनवरत चौबीसो घण्टे संलग्न हैं। दिव्यांगों की चिकित्सा, जरूरतमंदों की सहायता व पुनर्वास से लेकर मूक बधिर एवं प्रज्ञाचक्षु बालकों के शारीरिक, मानसिक, इन्द्रिक और बौद्धिक विकास में हर सम्भव प्रयास कर रहा है। इसके लिए आधुनिक तकनीक व विशेशज्ञों की सहायता भी ली जा रही है। जब आप किसी के थोड़े से भी दुःख को अनपा लेतें हैं तो, आपका अपना दुःख ईश्वर स्वंय हर लेते हैं। जो अपना गम–दुःख भूलकर अपना सहन कर मुस्कुराते हुए दूसरों की पीड़ा दूर करने में सहायक बन जाते हैं, उससे बड़ा तप और क्या हो सकता है। नारायण सेवा में आपकी सेवा और सहयोग उसी तप की श्रेणी में है। हाल ही में 6 मार्च को सम्पन्न संस्थान के 37वें दिव्यांग एवं निर्धन युवक–युवती विवाह समारोह में आपकी गरिमामय उपस्थिति और सहयोग से 21 जोड़ो की नई गृहस्थी बन सकी। इनमें कई जोड़े ऐसे थे जिसमें एक सकलांग तो दूसरा दिव्यांग, एक दृश्टिबाधित तो सदृश्टि साथी जो उसकी ज्योति के रूप में साथ चला। मार्च में ही त्रिदिवसीय (25,26,27) राश्ट्रीय पैरालम्पिक तैराकी प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। इस राश्ट्रीय स्पर्द्धा के आयोजन का संस्थान को दूसरी बार अवसर मिला। इससे पूर्व संन् 2017 में यह आयोजन का निमित बना। जिसमें देश भर के दिव्यांग तैराकों ने भाग लिया। दूसरी पैरा तैराकी स्पर्द्धा का सम्पूर्ण सचित्र विवरण 'सेवा सौभाग्य' को मई अंकमें देख सकेंगे। आपके ही सहयोग से फरवरी–मार्च में 'रोटी, कपड़ा और मकान' योजना के तहत संस्थान ने जरूरतमंद वनवासी भाई–बहनों के लिए घर, राशन, वस्त्र व गरीब बच्चों की स्कूल फीस का व्यापक स्तर पर प्रबंध किया।

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

कैलाश को बात समझ में आ गई। उसने रिश्ते के कॉलम में भतीजा लिख कर हस्ताक्षर कर दिये। डॉक्टर तुरन्त उसे ऑपरेशन रूम में ले गया और अपनी कार्रवाई शुरू कर दी। रात काफी हो गई थी, वह दुर्घटनाग्रस्त घायलों से मिल कर घर लौट आया। कमला उसकी बाट जोह रही थी, घर में प्रवेश करते ही पूछ बैठी–इतनी देर कैसे लग गई तो कैलाश ने उसे आदिवासी लड़के की पूरी बात बताई। कमला भी सुन कर सन्न रह गई। अगले दिन नहा–धो कर तैयार हुआ और ओफिस जाने के पहले अस्पताल का एक चक्कर लगाने की सोचते हुए उधर ही बढ़ गया। अस्पताल में प्रवेश करते ही एक स्त्री के रूदन और विलाप की आवाजें आई तो कैलाश चौंक गया। एकाएक यही खयाल आया कि घायलों में से कोई चल बसा प्रतीत होता है। जिधर से स्त्री की आवाजें आ रहीं थी, उसके पांव उधर ही बढ़ गये। दुर्घटना के सभी 40 घायल यहीं भर्ती थे। इन्हीं में से एक व्यक्ति की पत्नी आ गई थी। वही अपने पति के पलंग के पास बैठी विलाप कर रही थीं। डा. खत्री भी वहीं खड़े थे। स्त्री जोर जोर से विलाप कर रही थी – अब मेरे क्या होगा, मैं विधवा हो जाऊंगी। उसकी आवाजों से पूरे अस्पताल की शांति भंग हो रही थी। डॉ. उसे समझाने, चुप कराने की कोशिश कर रहे थे मगर वह चुप होने का नाम ही नहीं ले रही थी। कैलाश के मन में जिज्ञासा तो उस लड़के का हाल चाल जानने की थी जिसके हाथ पांव काटने की बात हो रही थी मगर यहां इस स्त्री का रूदन देख वह सब भूल गया। डाक्टर खत्री ने उसे देखते ही कहा–कैलाश जी इस स्त्री को समझाओ, रात को आप गये उसके बाद यह आई और तब से ही रो–रो कर पूरा अस्पताल सिर पर उठा लिया। इधर तो मैं उस लड़के का ऑपरेशन कर रहा था और इधर इसका चीखना चिल्लाना। पूरी रात सभी मरीज परेशान हो गये। डा. के मुँह से लड़के का जिक्र सुनते ही कैलाश को यहां आने का अपना मूल कारण याद आ गया और वह पूछ बैठा–वह लड़का कैसा है, ऑपरेशन ठीक हो गया ? डॉ. ने बताया कि ऑपरेशन बहुत बड़ा था मगर अच्छा हो गया। लड़का होश में आ गया है और सो रहा है। दोनों के बीच यह बातचीत चल रही थी तभी उस स्त्री का चिल्लाना फिर बढ़ गया। डाक्टर ने कैलाश को कहा कि इसे समझा दो कि चुप रहे वरना इसके पति की बिना ईलाज ही छुट्टी कर देंगे। यह कह कर डाक्टर आगे बढ़ गये। कैला ा उस स्त्री के पास गया और सांत्वना देने लगा, मगर वह बजाय चुप होने के और जोर से रोने लगी, विलाप करने लगी–मेरा क्या होगा, मैं कहां जाऊंगी।

अंश - 051

जीरा, सौंफ और अजवायन की गोलियां करती है। कीड़ों से बचाव

- बच्चों के पेट में कीड़े होने से पाचन संबंधी परेशानी हो सकती है। भूख न लगना, जी मिचलना, उल्टी आदि लक्षण दिखते हैं। कीड़ों से बचाव में घरेलू उपाय भी कारगर है।
- एक – एक चम्मच जीरा और आधा हिस्सा अजवायन को हींग के साथ घी में भून लें और गुड़ के साथ गोलियां बना लें । बच्चा छोटा है तो 2–3 गोलियां और बड़ा है। तो 5–6 गोलियां सुबह– शाम को दें।
- अमलताश के फल का गुदा निकालकर दूध के साथ उबाल लें। इसे कुछ दिनों तक रोज दें।
- अमलताश के फल को सुखाकर सेंधा नमक –गुड़ के साथ गोलियां बनाकर दें।
- रात को सोने से पहले 10 ग्राम कलौंजी को पीसकर 3 चम्मच शहद के साथ देने से भी फायदा होता है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अक्षय तृतीया पर पाएं सुख-समृद्धि और सौभाग्य

अक्षय तृतीया पर्व 3 मई को पूरे देशभर में मनाया जाएगा। ये वह त्योहार जो हमें अपने सद्कर्मो का कई गुना फल देता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इस दिन दान–पुण्य करना चाहिए। जिससे जीवन में सुख और समृद्धि की प्राप्ति हो सके।

इन चीजों के दान से मिलता है सौभाग्य

जलपात्र दान – वैशाख के महीने में लोगों को पेयजल उपलब्ध कराना पुण्य का काम है। अक्षय तृतीया के दिन जल से भरे पात्र का दान करना परम पुण्यदायी माना गया है। इसके लिये आप मटका या फिर कलश का दान कर सकते हैं। जल पात्र हमेशा भरा हुआ ही दान करें। साथ ही पशुओं को पानी पिलाना काफी पुण्य का काम माना गया है। माना जाता है कि अक्षय तृतीया के दिन जल से भरे पात्र का दान करने से आपकी जन्म कुण्डली में चंद्रमा की स्थिति मजबूत होती है।

अन्न दान– किसी प्यासे को पानी पिलाना या भूखे को भोजन करावाना बड़े ही पुण्य का काम है। अक्षय तृतीया के दिन भोजन दान करने से नवग्रह शांत होते है। देवताओं की कृपा भी मिलती है। जीवन में सुख और समृद्धि प्राप्त होती है। अक्षय तृतीया के दिन ज्वार, सत्तू , तिल और चावल का दान महत्वपूर्ण हैं। शास्त्रों में गेहूं को सोने के समान महत्वपूर्ण माना गया है। इसलिए अन्न दान महत्वपूर्ण है। वस्त्र दान– अक्षय तृतीया के दिन वस्त्रों का दान करना भी बेहद शुभफलदायी माना गया है। इस बार अक्षय तृतीया बेहद खास शुभ योग में होने वाले वस्त्र दान का महत्व और भी बढ़ जाता है। अक्षय तृतीया को सफेद और चमकीले वस्त्रों का दान करना चाहिए। मान्यता है कि वस्त्रों को दान करने से जातक का शुक्रग्रह मजबूत होता है, इसे आपके जीवन में भौतिक सुविधाओं और सुखद वैवाहिक जीवन के लिए सबसे ज्यादा जरूरी माना जाता है।

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अनुभव अमृतम्

मैं दौड़ कर गया और बाँहें फैला दी। मैं आपका कैलाश, कई जन्मों से आपका सम्बन्धी रहा हूँ। इस जन्म में मिल गये। उन्होंने बाँहें फैला करके मुझे गले लगा लिया। मेरी आँखों में जल भर आया, उनका बेटा राजेश 20 साल का, वो भी रोने लगा, कितना प्रेम? कितनी बार रोये इन कामनाओं की वजह से ? सब कुछ तो दे दिया ठाकुर जी ने, कैलाश, अब क्यों रोता है?

जो सोवत है, जो खोवत है,
जो जागत है, सो पावत है।।

22 पीएण्डटी कॉलोनी सीढ़ियों को चढ़कर आने लगे तो बोले कि बाबूजी मेरे पास कुछ है। कॉपियाँ लाया हूँ, मैं रजिस्टर लाया, पेन्सिल लाया हूँ, जोमेट्री बॉक्स लाया हूँ बच्चों के लिये, तो अभी आप ले लीजिये, अभी आप ले लीजिये। मैं कुछ पैसे भी लाया हूँ, ये साढ़े छः सौ रुपये बच्चों की पढ़ाई के लिये, ये 1100 रुपये पौष्टिक आहार के लिये गेहूँ के लिये, खजाना खोल दिया। जैसे शबरी ने अपना खजाना खोल दिया। उनके खजाने के लिये अरबों– खरबों के बेर। जंगल के बेर, अब कोई इसकी बराबरी नहीं कर सकता। न ही भारत के सबसे बड़े धनपति कर सकते, ना ही विश्व के सबसे बड़े धनपति कर सकते हैं। आपका धन आपको मुबारक हो। आपके डायमण्ड की ज्लेवरी बार–बार आप देखा करो। राग–द्वेष बढ़ाया करो, अभिमान का संवर्धन किया करो, न ही सोना चाहिये, न ही चाँदी चाहिये, न ही शेयर बाजार में मार्केट में कोई शेयर है, न ही उसके गिरने फिसलने का खतरा है, न ही उसके चढ़ने की खुशी है। ये रोज की हँसी, कभी राजी हुए, तो कभी बेराजी हुए, तो फिर राजी और फिर बेराजी। ये कोई जीवन है? अखण्ड आनन्द की ज्योति जलनी चाहिये। पीजी जैन साहब ने खजाना खोल दिया। जगदीश जी आर्य आप रसीद काटिये, उस जमाने में 6–7 हजार रुपया। 31 दिसम्बर को फिर ऊपर लाये, फिर भोजन करते हुये मैंने पूछा कि बाबू जी आप ठहरे कहाँ, आपका सामान कहाँ है? बोले कैलाश जी हाथी पोल के पास एक जैन धर्म शाला है, मैंने वहाँ कमरा लिया।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 404 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023